श्री रामायण आरती

आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की॥

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद।
बाल्मीकि बिग्यान बिसारद॥

शुक सनकादिक शेष अरु शारद।
बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥

आरती श्री रामायण जी की॥

गावत बेद पुरान अष्टदस।
छओं शास्त्र सब ग्रंथन को रस॥

मुनि जन धन संतान को सरबस।
सार अंश सम्मत सब ही की॥

आरती श्री रामायण जी की॥

गावत संतत शंभु भवानी।
अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी॥

ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी।
कागभुशुंडि गरुड़ के ही की॥

आरती श्री रामायण जी की॥

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी।
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की॥

दलनि रोग भव मूरि अमी की।
तात मातु सब बिधि तुलसी की॥

आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल